2 जनवरी 2018, कुल पृष्ठ : 4, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे जिनवाणी चैनल पर

जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि

प्रतिदिन

प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 40, अंक : 19 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जनवरी (प्रथम), 2018 (वीर नि. संवत्-2544) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

पंचम वार्षिक महोत्सव संपन्न

भीलवाड़ा (राज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन आत्मार्थी ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री सीमंधर जिनालय का पंचम वार्षिक महोत्सव दिनांक 22 से 24 दिसम्बर तक पंच परमेष्ठी विधानपूर्वक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के अतिरिक्त पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर द्वारा 'इन भावों का फल क्या होगा?', 'दु:ख का मूल कारण क्या है?' एवं 'जिनेन्द्र भगवान हमें क्या देते हैं?' विषय पर अत्यंत सरल भाषा व आकर्षक शैली में व्याख्यानों का लाभ मिला। साथ ही पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन, पण्डित अश्विनजी नानावटी बांसवाड़ा एवं डॉ. अरविन्दजी जैन भीलवाड़ा का भी सान्निध्य प्राप्त हुआ।

महोत्सव में मंदिर के पास नवनिर्मित श्री कुन्दकुन्द कहान संस्कार भवन का लोकार्पण श्री महाचंदजी सेठी परिवार द्वारा किया गया।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित अश्विनजी नानावटी बांसवाड़ा द्वारा संपन्न हुये।

वेदी प्रतिष्ठा संपन्न

चिदायतन-हस्तिनापुर (उ.प्र.) : यहाँ नवनिर्मित चैत्यालय की वेदी प्रतिष्ठा दिनांक 16 व 17 दिसम्बर को सानन्द संपन्न हुई।

दिनांक 16 दिसम्बर को घट यात्रा में जिनेन्द्र भगवान को बड़े मन्दिर से चिदायतन ले जाया गया। तत्पश्चात् यागमंडल विधान में तीन काल के सभी तीर्थंकरों की पूजन की गई।

इस अवसर पर रात्रि में 'सम्यग्दर्शन' विषय पर पण्डित विमलजी झांझरी उज्जैन की अध्यक्षता में एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसका संचालन पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन ने किया। गोष्ठी में पण्डित वीरेन्द्रजी आगरा, डॉ. योगेशजी अलीगंज, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, पण्डित अरिहंतजी झांझरी, पण्डित हितेशजी चौघटिया आदि विद्वानों ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। सायंकाल जिनेन्द्र-भक्ति का भी आयोजन हुआ।

दिनांक 17 दिसम्बर को जिनेन्द्र-पूजन एवं गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के उपरांत ब्र. हेमन्तभाई गांधी के निर्देशन में पण्डित अशोकजी लुहाड़िया व पण्डित संजयजी मंगलायतन द्वारा मंत्रोच्चारपूर्वक वेदी प्रतिष्ठा का कार्यक्रम संपन्न हुआ। **- अनन्या जैन, मेरठ**

नियमसार विधान संपन्न

कोलकाता : यहाँ पद्मोपुकुर स्थित श्री दिगम्बर जैन मंदिर के वार्षिकोत्सव पर दिनांक 27 दिसम्बर 2017 से 1 जनवरी 2018 तक जैन परम्परा के सर्वोत्कृष्ट आचार्य प्रात: स्मरणीय आचार्य श्री कुन्दकुन्ददेव की अनुपम कृति श्री नियमसारजी के आधार से विरचित तत्त्ववेत्ता डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा रचित श्री नियमसार महामंडल विधान का भव्य आयोजन श्री कमलजी-महावीरजी-अशोकजी पाटनी परिवार की ओर से किया गया। सर्वप्रथम विधानकर्त्ता परिवार द्वारा मंगल कलश शोभायात्रा के उपरांत समस्त ट्रस्टियों के साथ ध्वजारोहण हुआ।

इस प्रसंग पर ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ.संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं स्वरलहरी विधानाचार्य पण्डित संजीवजी उस्मानपुरा-दिल्ली के मंगल सान्निध्य में विधान संपन्न हुआ।

कार्यक्रम में दोनों समय गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त डॉ. संजीवजी गोधा जयपुर द्वारा प्रात: नियमसार एवं सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के बाद आपके ही द्वारा विविध विषयों पर दो प्रवचनों का लाभ मिला।

दिनांक 31 दिसम्बर को रात्रि में 12 बजे तक पण्डित संजीवजी दिल्ली के सान्निध्य में विशेष जिनेन्द्र भक्ति एवं डॉ. संजीवजी गोधा द्वारा मार्मिक उद्बोधन का लाभ मिला। **- अमित जैन शास्त्री**

घर-घर चर्चा रहे धर्म की

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर, श्री अकलंकदेव न्याय महाविद्यालय बांसवाड़ा एवं आचार्य धरसेन महाविद्यालय कोटा के वर्तमान विद्यार्थियों एवं स्नातकों के सहयोग से ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान **मई और जून माह** में बालकों को धार्मिक-नैतिक संस्कार देने के उद्देश्य से सम्पूर्ण देश में ग्रुप शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। यदि आप अपने गाँव-नगर में शिविरों का आयोजन करना चाहते हैं तो हमसे संपर्क करें, ताकि उचित समय पर शिविर का आयोजन सुनिश्चित किया जा सके। उक्त शिविरों हेतु विद्वानों एवं पाठ्यसामग्री की व्यवस्था, अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा की जायेगी।

संपर्क सूत्र - पीयूष शास्त्री (9785643202), संजय शास्त्री (9509232733), रूपेन्द्र शास्त्री (8233372891), ज्ञायक शास्त्री (8829992225)

सम्पादकीय –

ऐसे क्या पाप किये? 2

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

जगत के जीवों की कुछ ऐसी ही मनोवृत्ति है कि वे पाप तो हंस-हंस कर करते हैं और उनका फल भुगतना नहीं चाहते। पुण्य कार्य करते नहीं है और फल पुण्य का चाहते हैं। वस्तुतः जीवों को पुण्य-पाप के परिणामों की पहचान ही नहीं है, पापबन्ध कैसे होता है, पुण्यबंध कैसे होता है, इसका पता ही नहीं है। वे बाहर में होती हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील आदि को ही पाप समझते हैं, **आत्मा में हो रहे खोटे भावों को पाप ही नहीं मानते।** यही सबसे बड़ी भूल हैं, जिसे अज्ञानी नहीं जानता। इसी कारण दुःख के ही बादल मंडराते रहते हैं जब क्षणभर को भी तो शान्ति नहीं मिलती तो भगवान से पूछता है **भगवन्! यह कैसी विडम्बना है?**

लक्ष्मीनन्दन मन ही मन कहता है – ''लोग कहते हैं पुण्य करो, धर्म करो, सुख होगा मैंने जीवन भर अपने कर्त्तव्य का पालन कर पुण्य ही तो किया, पाप बिल्कुल भी नहीं किया, फिर भी.....यह सब क्या चक्कर है? इसके सिवा और पुण्य क्या होता है? धर्म क्या होता है? कुछ समझ में नहीं आता। यद्यपि मैं रोज देवी की पूजा करता हूँ, घी के दीपक की ज्योत जलाता हूँ, वर्ष में एक दो बार तीर्थ कर आता हूँ फिर भी कुछ नहीं...। इससे मुझे ऐसा लगता है कि मैं कहीं भूल में तो हूँ - अन्यथा यह दुःख क्यों?''

वस्तुस्थिति यह है कि अभी जीवों को पाप की भी सही पहचान नहीं है। हत्या, झूँठ, चोरी, पराई माँ-बहिन-बेटी पर कुदृष्टि तो पाप है ही; परन्तु पाप-पुण्य का सम्बन्ध पर द्रव्यों से नहीं; बल्कि अपने परिणामों से होता है; अपने मिथ्या अभिप्राय से होता है, इसकी उसे खबर नहीं हैं।

जगत में कोई पदार्थ इष्ट-अनिष्ट नहीं है, भला-बुरा नहीं है, फिर भी उसे भला-बुरा मानना। तथा इष्ट-अनिष्ट मानकर उसमें राग-द्वेष करना। ऐसे मिथ्या अभिप्राय से दिन-रात आर्तध्यान, रौद्रध्यान रूप पाप परिणामों में डूबे इस व्यक्ति को यह समझ में नहीं आता कि इष्टवियोगज एवं अनिष्ट संयोगज तथा पीड़ा चिन्तन रूप आर्त्तध्यान और पाँचों इन्द्रियों के विषयों में आनन्द मानना उनके संग्रह में सुख होना मानना रौद्रध्यान है और यह भी पाप है। जबकि वास्तविकता यह है कि भले ही जीवन भर इसके द्वारा एक भी प्राणी का घात न हुआ हो, एक भी शब्द असत्य न बोला हो, इसी तरह चोरी, कुशील व बाह्य परिग्रह में किंचित भी प्रवृत्ति न हुई हो परन्तु देवी-देवताओं की उपासना रूप गृहीत मिथ्यात्व के साथ उक्त मिथ्या मान्यता से इष्ट-वियोग, अनिष्ट-संयोग, पीड़ा-चिन्तन रूप आर्तध्यान करता रहे, विषयानन्दी रौद्रध्यान करता रहे तो ये सब पाप ही हैं। इसीतरह अपने परिवार के प्रति प्रीत करता हुआ उसमें आनन्द मनाये, तो ये भी हिंसानंदी और परिग्रहानंदी रौद्रध्यान हैं जो पूर्णतः पाप परिणाम हैं, ये परिणाम ही दुःख के कारण हैं। (क्रमशः)

हार्दिक बधाई!

दलपतपुर-सागर (म.प्र.) निवासी श्री विनोदकुमारजी मोदी के सुपुत्र **चि. विद्युतकुमार मोदी** का शुभ विवाह टीकमगढ (म.प्र.) निवासी श्री के.एल. जैन की सुपुत्री **सौ. साधना जैन** के साथ दिनांक 13 दिसम्बर को संपन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये। जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई!

मुक्त विद्यापीठ के छात्र ध्यान दें !

मुक्त विद्यापीठ के द्विवर्षीय विशारद एवं त्रिवर्षीय सिद्धांत विशारद परीक्षा के द्वितीय सेमेस्टर परीक्षा के प्रश्नपत्र संबंधित सभी परीक्षार्थियों को डाक द्वारा भेजे जा चुके हैं। जिन्हें अब तक भी नहीं मिलें हो, वे सूचना भेजकर परीक्षा बोर्ड कार्यालय से मंगा सकते हैं।

– विनीत शास्त्री (प्रबंधक)

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

11 से 12 जन. 2018	मंगलायतन विश्व. अलीगढ	सेमिनार
11 से 15 फर. 2018	ललितपुर	पंचकल्याणक
17 व 20 फर. 2018	श्रवणबेलगोला	महामस्तकाभिषेक
23 से 25 फर. 2018	जयपुर	वार्षिकोत्सव
28 फर.से 2 मार्च 2018	कोटा (मुमुक्षु आश्रम)	वार्षिक मेला (होली)
3 से 5 मार्च-2018	इन्दौर (ढाईद्वीप)	प्रवचनसार विधान

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

एक मोक्षार्थी की पूर्व भूमिका (8)

स्वयं परीक्षा कैसे करें? क्या यह संभव है?

– **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

पिछले अंक में हमने पढा कि **यद्यपि हम निरंतर सुखी होने के प्रयासों में व्यस्त रहते हैं, तथापि अंतत: सुखी नहीं हो पाने की स्थिति में अपनी विफलता का श्रेय हम इस या उस व्यक्ति, परिस्थिति या कारण को देकर एक बार फिर सुखी होने के लिये अपने उन्हीं प्रयासों में जुट जाते हैं जो अनेकों बार असफल साबित हो चुके हैं।**

अपनी लगातार की **अनेकों असफलताओं के बावजूद हमारा ध्यान इस ओर जाता ही नहीं है कि शायद 'इन तिलों में तेल हो ही नहीं', संसार में सुख हो ही नहीं।**

हमारी उक्त प्रवृत्ति का एक कारण और भी है, **''विकल्पहीनता'', किसी अन्य विकल्प का अभाव।**

जब हमारी सोच का दायरा इस संसार की सीमाओं से बाहर है ही नहीं, इसके अतिरिक्त कोई अन्य विकल्प हमारे पास है ही नहीं, तो ''मरता क्या न करता'', जो कुछ जैसा भी उपलब्ध है, आधा-अधूरा ही सही, काम तो ''अंधों में काना राजा'' से ही चलाना होगा ना! हम सबकी यह मजबूरी है।

पर नहीं! अब हमें अपनी दृष्टि के दायरे को और विस्तार देना होगा, इसे इस संसार और लोक की सीमाओं से बाहर निकालकर व्यापक और पारलौकिक बनाना होगा।

यहाँ मैं एक बार फिर इस तथ्य की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ कि **''संसार में सुख की परिकल्पना ही व्यर्थ है, संसार एकांतरूप से दु:ख और दु:खस्वरूप ही है''। यदि हमें सुख चाहिये, सुखी होना है तो हमें संसार की इस कक्षा से बाहर निकलना ही होगा, पारलौकिक कक्षा में प्रविष्ट होना ही होगा। यह कोई सामान्य कार्य नहीं, इसके लिये एक पृथक् दृष्टिकोण की आवश्यकता है, अपनी दिशा बदलने की आवश्यकता है, अपने वर्तमान प्रयासों से हटकर कुछ अलग किस्म के प्रयासों की जरूरत है, अनन्त पुरुषार्थ की आवश्यकता है। पुरुषार्थ उस किस्म का नहीं जिसे हम पुरुषार्थ समझते हैं, वह तो पुरुषार्थ नहीं प्रमाद है।**

दुनिया तो भाग-दौड़, उठापटक और हलचल को पुरुषार्थ मानती है; **इसमें तो ऐसा पुरुषार्थ चाहिये जिसमें हलचल न हो, कोलाहल न हो, भागदौड़, उठापटक, जोड़तोड़ से पृथक् एक अन्तर्मुखी शान्त क्रांति, क्रांतिकारी पुरुषार्थ की आवश्यकता है।**

प्रथम तो उक्त पुरुषार्थ को पुरुषार्थ स्वीकार करना ही अपने आप में भागीरथी कार्य है, पर यही मार्ग है, यही सबकुछ है, इसके अतिरिक्त और कुछ, कुछ भी नहीं है।

इस विषय में विस्तृत चर्चा आगे नियतक्रम में करेंगे।

यहाँ यक्षप्रश्न तो यह है कि सीमित समय में, अपनी इस अत्यंत सीमित सामर्थ्य के साथ इस विशाल, **अनन्त संसार की परीक्षा हम स्वयं कैसे करें?**

क्या यह संभव है?

इसकी विधि क्या है?

यह विधि जानना ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण कार्य है।

आज हमारी समस्याओं की जड़ ही यह है कि संसार अनन्त है, इसमें विषय अनन्त हैं, असंख्य प्रकार के भोग और भोगसामग्री है और हमारे पास समय सीमित है।

इस उपलब्ध सीमित समय में हम जिन सीमित वस्तुओं को परख पायें, जितने प्रकार की सीमित स्थितियों का सामना कर पायें, मान लीजिये उनके बारे में हम सही निष्कर्ष पर पहुँच भी जाएं कि ''ये व्यर्थ हैं, अनर्थ का सृजन करने वाली हैं, दु:ख हैं और दु:ख का कारण हैं'' पर तब भी ''दूर के ढोल सुहाने'' की उक्ति के अनुरूप, बिना देखे-जाने और आजमाए हुए अनन्त विषय और वस्तुएं ऐसी रह जाती हैं जिनमें सुख होने की संभावना हमारे दिलोदिमाग में बनी रहती है। बस यही परिकल्पना हमारा ध्यान संसार की भोग सामग्री की ओर से हटने नहीं देती है।

''हमें लगता है कि यह मानव जीवन तो मिला पर दौलत के बिना यह व्यर्थ है, यदि दौलत भी होती तो मैं सुखी हो सकता था'' अब यदि दौलत भी मिल जाती है तब यह कहता है ''इस दौलत का क्या करूँ? सोना खा तो नहीं सकता हूँ न! खानी तो रोटियाँ ही पड़ेंगी न! पर कोई दो रोटियाँ ढंग से सेककर देने वाला ही नहीं है, बस इतना इंतजाम हो जाए तो कोई दु:ख दर्द नहीं, फिर तो बस मजे ही मजे हैं'' ऐसा सोचकर शादी कर लेता है कि रोटियों की समस्या जीवनभर के लिये खत्म; पर अभी कुछ ही समय बीतता है तो कहने लगता है कि ''भोजन तो अच्छा बनाती है पर इसकी जबान कैंची की तरह चलती है, इतना माथा खाती है कि दीवार से सर मारने का मन करता है'' किसी तरह समझा-बुझाकर इसका भी समाधान हुआ तो एक नई समस्या खड़ी हो जाती है। मनचाहा भोजन करते-करते तोंद का घेरा बढने लगता है और डॉक्टर सीमित और अनचाहा (स्वास्थ्यकारी) भोजन करने की सलाह देने लगता है।

एक समय था जब यह धन कमाने के लिये दौड़ता था पर अब धन खर्च करके जिम जाता है, ट्रेडमिल पर घोड़े की तरह दौड़ता है और कुत्ते की तरह हांफता है।

पहले धन नहीं था तो विचार करता था कि ''बस इतना हो जाये तो कुछ नहीं चाहिये'' जब उतना हो गया तो लगने लगा कि ''कसर रह गई, इतना और हो तो अच्छा है'' वह भी मिल जाने पर कुछ और कमी नजर आने लगती है। एक समय आता है कि धन आवश्यकता से अधिक बढ जाता है तब चोर-लुटेरों, इनकमटेक्सवालों का डर तथा चंदा मांगने वालों का आतंक सताने लगता है। पहले सिर्फ कमाने में लगा रहता था अब कमाई संभालकर रखने का एक काम और बढ गया।

जब चौराहे पर एक अदना सा हवलदार रोककर बगल में खड़ा कर देता है तो अपनी सारी दौलत फिजूल से नजर आने लगती है और विचार आता है कि मात्र धन में सुख नहीं, साथ में सत्ता भी चाहिये। सत्ता की चाहत में जब राजनीति के क्षेत्र में उतरता है तब पता लगता है कि **पहले एक हवलदार का रुआब बर्दाश्त नहीं होता था अब लाखों वोटरों की गुलामी गले पड़ गई।** अब जब सबकुछ है तो कभी लगता है कि अपने लिये और अपनों के लिये ही समय नहीं है, शैया है पर सोने का समय नहीं है, भोजन है पर भोजन का अवकाश नहीं है, पहिनने के लिये सुन्दर-सुन्दर वस्त्राभूषण तो हैं पर उनके अन्दर सारे के सारे स्पेयर पार्ट (अंग-उपांग) बदली हुई एक जर्जर देह छुपी हुई है।

अनेक नौकर-चाकर आदेश की प्रतीक्षा में हाथ जोड़कर खड़े हैं पर अपना हाथ अपनी नहीं सुनता, अपनी इच्छानुसार हिलने को तैयार नहीं।

सारांश यह है कि जहाँ-जहाँ तक कल्पना के घोड़े दौड़ते थे सब कुछ जुटा लेने के बाद भी सुख-चैन नदारद ही रहता है। सबकुछ उपलब्ध होने के बावजूद सब्जी में मिर्च ज्यादा और नमक कम, रोटी कभी कच्ची रह जाती है तो कभी अधिक सिक जाती है, पारा यदि 2 डिग्री चढ जाये तो गर्मी लगने लगती है और यदि 2 डिग्री गिर जाये तो ठंड सताने लगती है। भोजन मिलने मे यदि 10 मिनट की देरी हो जाये तो भूख से बिलबिलाने लगता है और यदि 2 कौर अधिक खा ले तो पेट पकड़कर बैठ जाता है। सुखी होने के लिये सभी सम्भव साधन आजमा लेने के बाद भी सुख न मिलने की स्थिति में भी हमारे अन्दर एक तृष्णा बनी ही रहती है कि जो वस्तुएं हमें उपलब्ध नहीं हो पाई हैं, यदि वे उपलब्ध हो जाती तो मैं अवश्य सुखी हो जाता और ऐसा होना कभी किसी के साथ भी सम्भव नहीं है।

कहने का तात्पर्य यह है कि **जब तक हम उन अप्रयुक्त वस्तुओं और स्थितियों के बारे में भी दृढतापूर्वक इस निष्कर्ष पर न पहुँच जाएं कि ये भी दु:खस्वरूप और दु:ख का कारण हैं तब तक संसार में सांसारिक वस्तुओं और पर-पदार्थों के प्रति हमारा आकर्षण और सुखबुद्धि दूर नहीं हो सकती है और जब तक संसार में सुख की परिकल्पना मात्र विद्यमान रहती है, संसार से सच्ची विरक्ति होकर सच्चे पारलौकिक सुख की खोज का पुरुषार्थ संभव ही नहीं है;** क्योंकि तब तक तो यह जीव सुख की तलाश में इन सब भोगों के बीच ही उलझा रहेगा न!

हम स्वयं संसार की समस्त भोगसामग्री का उपभोग और प्रयोग स्वयं ही करके देख पायें यह किसी के लिये किसी भी हाल में संभव नहीं है। तब हम कैसे इस निष्कर्ष पर पहुंचें कि इनमें सुख नहीं है और ऐसा करना संभव है नहीं।

तब प्रश्न यह उठता है कि आखिर हम करें क्या?

सर्वज्ञ हुए बिना तीन लोक और तीन काल की सब वस्तुओं, घटनाओं और संयोगों को जानना और समझना संभव नहीं है, देखे, जाने समझे और अनुभव किये बिना उनमें सुख की परिकल्पना दूर होना, उनसे विरक्त होना संभव नहीं है और जब तक सांसारिक वस्तुओं में से सुख बुद्धि दूर होकर आत्मलीनता न हो तब तक सर्वज्ञता संभव नहीं है।

इस प्रकार हम पाते हैं कि हम निर्णयहीनता की स्थिति में सुख और शांति की खोज में संसार व सांसारिक वस्तुओं में ही उलझे रहते हैं और संसार में सुख है नहीं, इसलिये हम दु:खी ही बने रहते हैं।

हम किस प्रकार स्वयं अनुभव करके इस अंतिम निर्णय पर पहुंचे कि संसार में किसी भी स्थिति या परिस्थिति में किंचित मात्र भी सुख नहीं है, यह विधि जानने के लिये पढें इस शृंखला की अगली कड़ी... (क्रमश:)

आवश्यक सूचना

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) द्वारा जनवरी 2018 में आयोजित होने वाली शीतकालीन परीक्षा के प्रश्न पत्र संबंधित सभी परीक्षा केन्द्रों को भिजवाये जा चुके हैं; जिन्हें नहीं मिलें हो, वे सूचना भेजकर परीक्षा बोर्ड कार्यालय से मंगा सकते हैं।

– विनीत शास्त्री (प्रबंधक)

वैराग्य समाचार

(1) तेलाकुणी-कलबुर्गी (कर्नाटक) निवासी श्रीमती इन्दुमती (इन्दुबाई) शिवगुण्डप्पा नेज का दिनांक 14 नवम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक एवं वीतराग-विज्ञान (कन्नड) मासिक के प्रबन्ध-सम्पादक श्रीमंतजी नेज की माताजी थीं।

(2) डूंगरपुर (राज.) निवासी श्री रमणलालजी शाह का दिनांक 11 दिसम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। डूंगरपुर में तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में आपका महत्वपूर्ण सहयोग रहा। चैतन्यधाम व ध्रुवधाम के शिविरों में आप तत्त्वज्ञान का लाभ लेते थे। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 3100/- रुपये की राशि प्राप्त हुई।

दिवंगत आत्माएं चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

हार्दिक आमंत्रण : अवश्य पधारें !

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा फरवरी 2012 में ऐतिहासिक एवं भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन किया गया था; उस महामहोत्सव की यादें सभी को पुन: ताजा हो जावें, इस हेतु पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का **छठवाँ वार्षिक महोत्सव शुक्रवार, दिनांक 23 फरवरी से रविवार, दिनांक 25 फरवरी 2018 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।**

इस मंगल महोत्सव में पधारने हेतु आप सभी को हार्दिक आमंत्रण है।

प्रकाशन तिथि : 28 दिसम्बर 2017

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा,** एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com